

मधुसूक्त-वाली गाथा

आशा अश्वकाथि

1.825

I

ASHA ARCHIVES

ह. ३

॥१॥

श्रीगणेशायनमः॥ हनुमान्दत्तालीमाः॥ दोहा ॥
श्रीगुरुचरणशरोजरजनीजमनमुकरमुखा
र॥ वरगोरघुवरविमलयज्ञोदायकफ
लधार॥१॥ पुष्पीनतनुजानीके सुमीरोप
वनकुमार॥ बलपुष्पीवीक्षादेहुं मोहि
हृहंकलेसवीकार॥२॥ धीपाई॥ ६३॥

चा. मा

॥१॥

जयहनुमान्गणेशगणेशगणेश॥ जयकपिहारी
हुं लोककुजागर॥१॥ रामदुतअनुलीतवल
धामा॥ अजनीपुत्रपवनसुतनामा॥२॥ माह
वीरवीरमवजंजीकुमतीनीवारसुमतीके
संजी॥३॥ कंचनवरनवीरगुवेला॥ का
ननकुंदलकुंचीतकेला॥४॥ हाठवज्रधोर

६-२ ॥ अजीत जै ॥ काये मुज जने कुता जै ॥ ५ ॥ झंकर सु
॥ २ ॥ वन के सनिन्दन ॥ ते ज प्रताप माहा जग वंदन ॥
॥ ६ ॥ विद्या कान गुनी अती चातुर ॥ राम का जक
रि वे को आतुर ॥ ७ ॥ प्रभु चरित्र सुन वे को रसि
दा ॥ राम लखन सीता मन बसिदा ॥ ८ ॥ गुहमर पासा
बिचरि सी बहि दिवा का ॥ वीर कत रूप धरि लंक ॥ २ ॥

जलावो ॥९॥ भीमरूप धरि असुर संहारे ॥ श्रीराम
चंद्रके काज जंघारे ॥१०॥ जायस जीवनलखनाजी
वाये ॥ श्रीरघुविंद हृदये कुदलाये ॥११॥ रघुपति
किं नीच कुतब जाई ॥ तुमसम सुप्रिय भदत नमभ
ई ॥१२॥ सहस्रवदन रुमरो वस गावै ॥ अस कहि
शिवति कं थल गावै ॥१३॥ मनकादि कं प्रसिद्धि

१५४

॥५॥

कावे ॥२३॥ भुतपिता वनीकत नहि आये ॥ साहवीर जब
नाम तु नावे ॥२४॥ नासे रोग हरे सब पिरा ॥ जपत
नीरं न हतु मत कल कीरा ॥२५॥ संकत से हतु मान दु
कावे ॥ मन रुस न बन जान जो ला लावे ॥२६॥ सब पर
समत पसीरा जा ॥ तीन के कोठ स कल तु म सा जा ॥
२७॥ थोर मनोरथ जो कोहिलावे ॥ ता सुअ श्रीत जी

का. ना

॥४॥

वन फल वावे ॥२८॥ चारों पुग पंद ता प तु म्हा रा ॥ हे वरसि
हि न गत ठी वारा ॥२९॥ सा धु संत के तु मर वि वारे ॥
म सु र नी कंदन रा म दु लारे ॥३०॥ अ कृ सि धी न
ज नी धी के दा ता ॥ भ स वर दिन जान को मा ता ॥३१॥
रा मर सा वन तु म्हे दा सा ॥ सा दर तु मर तु प पि
के दा सा ॥३२॥ ठु रे भ ज न रा म को वा वे ॥ ज म

ह. मा. ॥ ५ ॥ ज-म को दुख विमरावै ॥ ३३ ॥ अंत काल रघुवर पुर जा
ई ॥ जहा ज-मी हरि मत्त क हाई ॥ ३४ ॥ और देवता की
तन पारई ॥ हनु मंत से स मन सुख करई ॥ ३५ ॥ संकत
हरै मी ते स वपिरा ॥ जो सु मी रै हनु मत न ल वीरा ॥
३६ ॥ जये जये जये हनु मान गो साई ॥ कृपा करे गुरु
देव की नाहि ॥ ३७ ॥ ये सत वार पाथ कर जोरि ॥

कासा
॥ ५ ॥

दु ते नंदि माहा सुख होई ॥ ३८ ॥ जो यह पथ हनु मान का
मी सा ॥ होई ति श्री सा वि गो रि सा ॥ ३९ ॥ ठल सि दा स स
दा हरि चेला ॥ की जै दा स हरि देव से दे रौ ॥ ४० ॥ दोहा ॥
ब बन त न य स कत हर नं संग ल सु र ती हू प्र ॥ त म ला क
न सि ता स हि र हृ द वे व सि सु र मु प्र ॥ ४१ ॥ आ दो रा म त
को व ना दि ग म नं हि ला सु र को च नं वे दे हि हर नं ज

ह. मा.

॥ ६ ॥

ता पुमरनं सुग्रीवसं भासनं ॥ गालीवी ग्रहनं मसुद्रनर
नं लंकापुरि राहनं पसु या त्वरावन कुंल कर्न मर
नं येता अरा मायनं ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ रासावन तुलसि
कृते कहि कथा अनसार ॥ आसनली जे प्रेमहि भा
ई हेववन कुमार ॥ ४३ ॥ शीता वर रास चंद्र की ज्यो
इती श्री हनुमान चरित्रा संपूर्ण ॥ ४४ ॥

का. सा

॥ ६ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमोः भगवते बासुदेवाये नमः
॥ पांडव उवाच ॥ ॥ प्रह्लाद नारद पराशर पुन्य रि
क वासांवरिक कुक सौनव भीष्मकाया ॥ क्वंतागदा
जुनव शिष्ट नीविषणाया यतान हं परम भागवतं
नमामि ॥ १ ॥ प्रह्लाद नारद पराशर पुं एत रिक वासां

॥ राम ॥
॥ १ ॥

वरिक कुक सौनव भीष्मकाया अजुन वशीष्टु वि
मिषनयेतीतेद्रजना श्रीनारायण को भक्तजन क
नमेरो नमस्कार ह्यः भीमनीलो महषणले विति ग
या भया ॥ श्री धर्म उवाच ॥ धर्मो विदुषो ते युधिष्ठिर
किर्तनेन ॥ पापं प्रणश्यति कृकोदर किर्तनेन शत्रु
विनश्यति धनं जय किर्तनेन माडी कुतो कथय

तां न भवति रोगा ॥ जस लेखु थि हिरः राजा का नाम ले
 लाधर्म वधि आवलाः ॥ भिमसेन को नाम लिया
 पाय मोचन होला. अजुन को नाम लिया शत्रु
 को नाश को नास होला. नकुल. सहदेव का :
 नाम लिया. रोग दुतला भनि. श्रीधर्म ले विरति
 गर्दा भयाः ॥ बुल्लोठ वाच ॥ १ ॥ ये मानवा विगतः

॥ राम
 ॥ १ ॥

रापला ॥ नारायणं सुरगुहं सनतं समरनि ॥
 ध्याने न ते नरुत किल्लीष चेन नास्ति. मानुष यो
 एन पुनर्यि वती ॥ ॥ या ना राय ए यो संसा रमा
 कुचिराजु भरी नैः फेरि देवलो कका गुरु नाथ
 आया का जशेय ला विमुक्त ध्यान गरला. तस्को
 पाय पति हरला रोग पति दुतला फेरियो संसा

रसाऽतः त्रिपुल्लयपत्री दुतलाः भवती श्रीवृत्ताले
आज्ञागर्दीभया ॥ ३ ॥ ईन्द्र उवाच ॥ नारायणो नाम
नरो नराणां पतिश्च चौरकथितपृथ्वीयां ॥ अने
कजन्मा आतपापसचय हरत्येतेष्वंस्मृतमात्रय
व पापं प्रकोचोरभक्तु श्रीनारायणको नाम ज्ञे
यो संसारनरलोकमाजन्मलिकन श्रीनारायण

॥ रामा ॥
॥ ३ ॥

का नाम स्त्री जस ले पूजा पाठगर्दी अने कजन्म
मातरको पाप मोचन होला भवती श्री देवराज ईड
ले वितिगर्दी भया ॥ ४ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ मेव द्याम
पितृकौ सेयवासवासं द्विवत्सक कौतु भोद्रा सि
ताम् ॥ पुण्येयेतां पुं उरिकायताक्षं विष्णुवन्दे सर्व
लोकैक नानं ॥ कला नारायण भया देवि मेय कोः

स्यामजलोवरर्ण नारायण पितांबरैः श्याकाङ्क्षी
वत्सदिरु कौस्तुभवनसालागलामालायाकाभ
निजनयरपुण्यत्वाभरकाष्ट श्रीविषयमाना
धर्मेऽप्याका नारायणनैरोजमत्का इह भगीश्री
धर्मयुधिष्ठिरराजाले विंतिगदी भया ॥ भीमसेन
उवाच ॥ जलो घमघ्रासराचराधरा विष्णोको

॥ ४ ॥

त्वास्वीलचित्त्वमुर्निना ॥ समुधतायनवराहहृपिणा
समेत्वयं भुभगवान्प्रसिदतु ॥ हेनारायणयस्य
श्रीविषयनपाईलेवराहअवतारलीकनयो
ए श्रीउवाचसिनरलोककोउधारगर्जमयोयत्ना
तिमिभगवान्मयैरुपाप्रसन्नरुवसभदीभीम
सेनलेविंतिगदीभया ॥ ६ ॥ अनुनउवाच ॥ अविंत्य

मध्यममनंतममयं विभुं प्रभु भाति न वित्त भाव
 नं ॥ त्रैलोक्य विस्तार विचार ककार कं हरि प्रपन्नो स्मिन्
 निर्मल हृत्पुत्र ॥ हे नारायण नत पाई का विंच न नाग न्याप
 नी विंच न नागरि स कजु छैन बरु पद्धि त पाई का अ भ
 पाइ स कजु पवि छैन ना सजु पनी त पाई ले छैन संसा
 र को गती भ न्याप नी त पाई का पाउ यत्ना नारायण ति

॥ राम ॥
 ॥ ५ ॥

मिमक नगती मोक्ष दिनु हव स भनि अजु न ले विनिग
 र्य भया ॥ ७ ॥ नकुल उवाच ॥ यदि गमन मध्ये तात्काल
 पाशा नुबंधात् ॥ यदि च कुल विहीने जायते पक्षि किंटे
 ॥ कृमि सतत मणि गत्वा ध्यायते वांत रात्मा मम भव ह
 दिष्ट्या केशवो भक्ति रेका ॥ हे नारायण ति मिले ज अ
 दिष्ट्यो स्व कर्म पास ले वंधन गरि पृथ्वी विषमा पक्षि

७३

कि रपतंगईत्यादिजन्मस्त्रियाकासमन्तिबोभक्तजन
भैकनमलाईकृपाप्रसन्नरुबसुभनि नकुललेविः
तिगर्दभया॥८॥ सरुदेवउवाच॥ तस्यपुत्रोवराहस्य
विमो रतुलनेजस॥ प्रणामये प्रकुवन्ति तेषांमपिन
मोनम॥ हेनारायणतपाइकाजज्ञचराह अवनाहमा
जहोभक्तीजनभैकनवसला तपाईलाईपनी तपा

न

शम॥

॥६॥

ईकाभक्तजनकनपनीमेरोनमरकारछभनीसरु
देवलेवितिगर्दभया॥९॥ कुत्पुउवाच॥ स्वकर्मफ
लमिदिष्मयायायेनीबुजाम्यहं॥ तस्यानस्याह
षिकेसत्वशभक्तीईछातुमे॥ हेनारायणमेराक
र्मकाफललेकाकाजन्मलीनुयई सो जन्ममाः
तिमोभक्तिगर्तकनमेराहृदयमा निमोभक्तीः

गणै कैलेन दु तोस भनी कुं तिले विंति गद्य भः
 पा ॥ १० ॥ मा डि उ वाच ॥ कृष्ण रता कृष्ण मनु स्मरं धि
 रात्रौ च कृष्ण पुन रु स्थिता ये ॥ ते भिन देह प्रवि सं
 तिकृष्ण हरि र्था सं व्रुतं रुता से ॥ हे नारायण
 जश्चे आका वि भ मा रा वि नि वा भा व भ नि सु म र ए
 र ष ष त स ला इ क सो ग रि उ षा र ग र्नु रुं ष भ न्या ज

॥ राम ॥
 ॥ ७ ॥

सा त न्ना ना म ज्ञान ले ले ला ता य नी अ ज्ञान
 लि या ता य नी य कै फ ल पा उं ष क्का अर्थ ले
 भ न्या अग्नि मा ज्ञान ले छो या ता प नि अ ज्ञान
 ले छो या ता प नि पो ल द ष त स अर्थ ति मो न्याः
 स भ नी अ गि रा अ षि ले विंति ग द्य भ या ॥ ५७ ॥
 पा रा स र उ वा च ॥ स कृ द् च रि त य न रु रि रि

नि

त्वक्षरद्वयं । तद्वपरिकरस्तेन मोक्षाय गमनं
 प्रति । हनारायणतिष्ठो नाम भन्तु हरि हरि श्रुत्वा
 रले ससारसर्वैक नमोस्तु वैकुण्ठवासिभ्यः
 स्वभनी-पाशसराधिले विंतिगर्दभया ॥ ५ ॥
 ८ ॥ घौल लय उवाच ॥ हे जिह्वरससारंगे-सर्वदा
 मधुरप्रिया ॥ नारायण स्वापियुषं-पिबति जि

राम ॥
 ३२ ॥

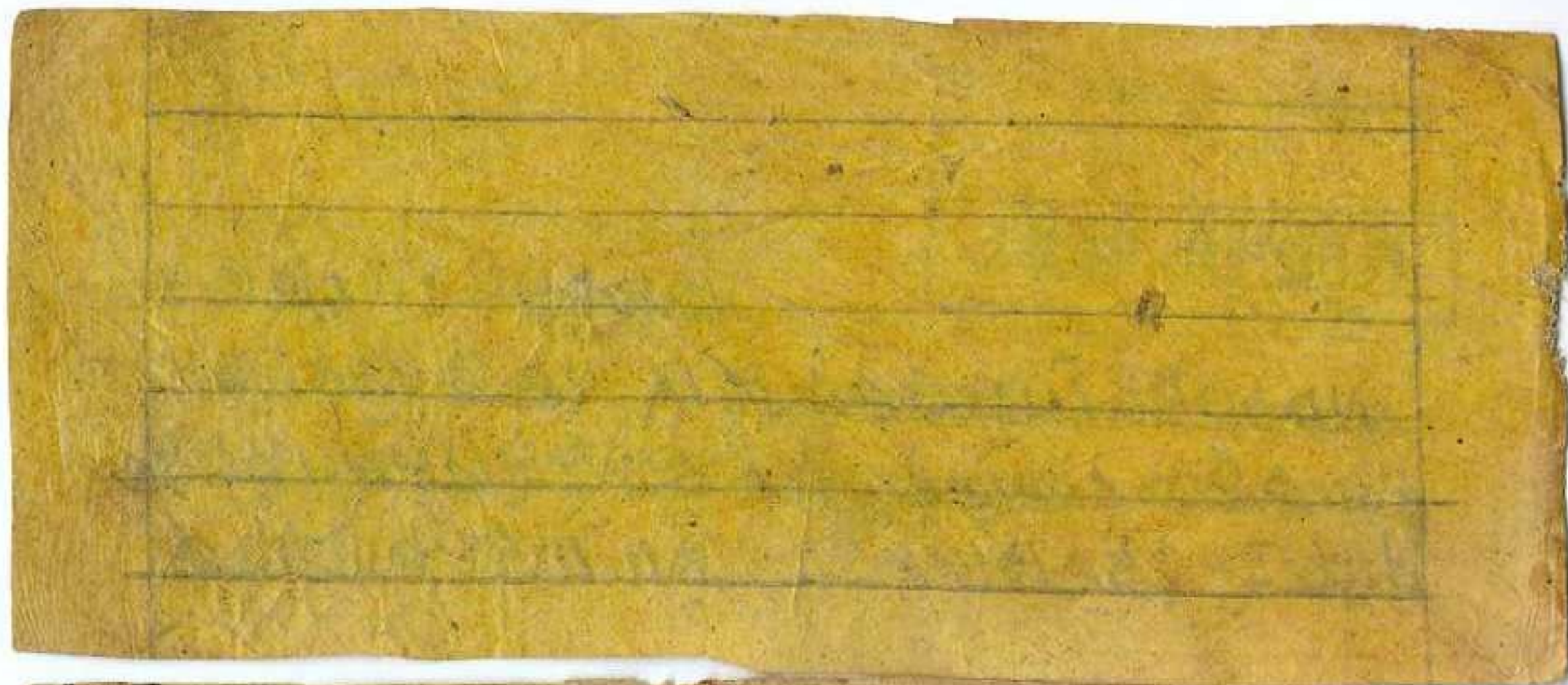
नारायण श्रुत्वा नैकमनुष्यक न उपादे सग न्याय्य
 श्रुत्वा लेभ न्यासवर्गवासदिपनीमोक्षदिन्याप
 नी सुखदिन्यापनी मार्क-एतु उवाच ॥ विंतिगर्द
 भया ॥ जज्ञे योगीना पाठगर्ला उल्लोस हरि
 पवित्रहोला-आयुवृक्षपुण्यफलहोलाः
 दुखको नासहोला ॥ ६ ॥ यई दृष्टान्तरुत्थाय श्रु

चित्तुं गतमानशः॥ वागसनसह श्रुहस्पसम
 सन्नस्ययनफलं॥ योगीताज श्रे तुचिपवित्र
 गरिकनपाठ पुजागर्ल तत्कनदसहजारको
 तिगोदन्नगन्नाको फलपावला॥ ६१॥ गवास
 तसहस्रस्यसमेगण दस्ययनफलं तत्फलस
 मवाप्रोतिचपठतिसलव॥ योगीताज श्रे पाठ

॥ ३४ ॥

ॐ गणेशाय नमः॥ ॥ कर्मनामनसावाच प्रयं नो स्मी वि
 नायकं॥ नेतरनिमहाद्यो रं सं सारं कामवर्जितं
 ॥ १॥ प्रद्योवाच॥ ॥ अगवन् श्रोतुषु पुरोय वास
 मया तरे॥ ४॥ सर्वदा वा

आशा अरुकाथि	
A	



आशा नरकवर्ध

1.825 I

ASIA ARCHIVES